अव्यय

अव्यय की परिभाषा

जिन शब्दों में बदलाव नहीं होता, इसलिए वे हमेशा एक रुप में बने रहते हैं, उनके, एक ही रुप के कारण इन्हें अव्यय कहते हैं।

दूसरों शब्दों में अव्यय का अर्थ है - अ + व्यय = जिनका व्यय न हो। अर्थात् जो बिना विचार के हो, इस कारण इन्हें बदला नहीं जा सकता, इसलिए इनको अविकारी शब्दों के नाम से भी जाना जाता है।

परिभाषा - जिन शब्दों में लिंग, वचन, पुरुष, काल आदि से मिलकर विकार (रुप में बदलाव नहीं आता अव्यय कहलाते हैं;

जैसे - ओह, अरे, तेज़, आज, परंतु, किंतु।

अव्यय चार प्रकार के होते हैं -

(1) क्रिया विशेषण

(2) विस्मयादिबोधक

(3) संबंधबोधक

(4) समुच्चयबोधक

क्रिया विशेषण

जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं वे क्रिया विशेषण कहलाते हैं;

जैसे -

(1) मोहन सुन्दर लिखता है।

'सुन्दर' शब्द यहाँ क्रिया की विशेषता प्रकट कर रहा है।

(2) हिमाशुँ यहाँ रहता है।

'यहाँ' शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट कर रहा है।

(3) रवि प्रतिदिन पढ़ता है।

यहाँ '**प्रतिदिन**' क्रिया की विशेषता प्रकट कर रहा है।

सभी क्रिया विशेषण शब्द अविकारी शब्द होते हैं, अर्थात् लिंग, वचन और कारक के कारण इनका रुप परिवर्तित नहीं होता। इसको इस तरह भी कहा जा सकता है - क्रिया की विशेषता बताने वाले अविकारी शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं और इनमें बदलाव नहीं किया जा सकता।

क्रिया-विशेषण के चार भेद माने जाते हैं -

(1) कालवाचक क्रिया-विशेषण

(2) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण

(3) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण

(4) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण

(1) कालवाचक क्रिया-विशेषण

जिस क्रिया-विशेषण शब्द से कार्य के होने का समय ज्ञात होता हो, वह कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाता है।

उदाहरण -

आज, कल, परसों, कब, कभी-कभी, प्रतिदिन, प्राय:, बाद जब, तब, यदा, कदा, तभी, तत्काल, शीघ्र, पूर्व, घड़ी-घड़ी, पीछे, अब, तत्पश्चात्, तदंतर, कल, कई बार, अभी, फिर इत्यादि।

(1) सीमा मेरे घर <u>कभी-कभी</u> आती है।

(2) तुम मेरे घर <u>कल</u> आई थी।

(3) <u>नित्य</u> स्नान करना चाहिए।

यहाँ 'कभी-कभी', 'कल', 'नित्य' क्रिया की विशेषता बता रहे हैं, इसलिए यहाँ कालवाचक क्रिया-विशेषण है।

(2) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण -

जिन शब्दों से कार्य के होने के स्थान का ज्ञान हो (बोध हो), उसे स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

उदाहरण - भीतर, बाहर, अंदर यहाँ, वहाँ, जहाँ, इधर, उधर, किधर, चारों ओर, कहाँ, ऊपर, नीचे, पास, दूर, अंदर, बाहर, आस, अन्यत्र, इस ओर, उस ओर, दाएँ, बाएँ, आदि।

(क) तुम <u>कहाँ</u> जा रहे हो?

(ख) <u>ऊपर</u> मत जाओ।

(ग) <u>चारों ओर</u> सुन्दर नज़ारा है।

(घ) <u>उस ओर</u> सूरज का घर है।

'यहाँ', 'कहाँ', 'ऊपर', 'चारों ओर' और 'उस ओर' स्थान वाचक क्रिया की विशेषता बता रहे हैं, इसलिए यहाँ स्थान वाचक क्रिया विशेषण है।

(3) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण -

जो शब्द क्रिया का परिमाण बतलाते हैं, वे 'परिमाणवाचक क्रिया विशेषण' कहलाते हैं।

उदाहरण - थोड़ा-थोड़ा, अधिक, अत्यंत, बहुत, कुछ, अल्प, पर्याप्त, प्रभूत, कम, न्यून, बूँद-बूँद, केवल, प्रायः, अनुमानतः, जितना, उतना, ज़रा, इत्यादि।

(1) <u>अधिक</u> मात्रा में मत खाना।

(2) ये साम्रगी <u>पर्याप्त</u> है।

(3) <u>कम</u> बोलना चाहिए।

(4) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण

जो शब्द क्रिया के होने की रीति या विधि संबधी विशेषता बताता है, उसे रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

उदाहरण - अचानक, सहसा, एकाएक, झटपट, धड़ाधड़, ध्यानपूर्वक, ठीक, वास्तव में, सचमुच, अवश्य, निस्संदेह, शायद, बेशक, संभव है, बहुत करके, कदाचित, हाँ, सच, ठीक, ज़रुर, जी, किसलिए, अतएव, क्योंकि, न, नहीं, कभी नहीं, मत, कदापि नहीं इत्यादि।

उदाहरणतया -

(1) ट्रेन पटरी पर धड़ाधड़ चल रही है।

(2) वास्तव में तुम इस सत्य से अनभिज्ञ हो,

(3) चाय ठीक से बनाना।

(4) शायद मैं कल नहीं आऊँगा।

सम्बंधबोधक अव्यय

संबंधबोधक अव्यय अपने पूर्वपद के साथ संबंध जोड़ता है। पद के पहले हमेशा किसी न किसी परसर्ग की अपेक्षा रहती है; जैसे -

की ओर, से दूर, के कारण, की जगह, के साथ, के वास्ते, की अपेक्षा, के अनुसार, की तरफ़, के पास, के बाहर, के अन्दर, के सामने, के नीचे इत्यादि।

(1) विजय के कारण हम लोग घूमने नहीं जा पाए।

(2) रमा के साथ मुझे बाज़ार जाना है।

(3) मेरे घर के पास नीम का पेड़ है।

(4) उत्तर की तरफ बाज़ार पड़ता है।

समुच्चयबोधक अव्यय

जो अव्यय, पदों, पदबंधों और उपवाक्यों को जोड़ते हैं, वह समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं; जैसे – कि, अथवा, और, क्योंकि, इसलिए, तथा, एवं, व, किन्तु , मगर, परन्तु , लेकिन, इस कारण, नहीं तो, ताकि, क्योंकि, या, अन्यथा, चाहो, न आदि।

उदाहरण -

(1) राम की पिटाई हुई क्योंकि उसने कक्षा का कार्य नहीं किया था।

(2) माता एवं पिता का सदैव सम्मान करना चाहिए।

(3) हम तुम्हारे घर जाते परंतु किसी कारण वश ना आ सके।

(4) श्याम के पैसे लौटा दो अन्यथा इसका परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहो।

विस्मयादिबोधक अव्यय

विस्मयादि बोधक अव्यय वे रुप हैं; जो शोक, घृणा, आश्चर्य, हर्ष आदि भावों को प्रकट करने के लिए अचानक ही मुँह से निकल जाते हैं, परन्तु इनका वाक्य के अन्य शब्दों से कोई सम्बन्ध नहीं बनता।

हमेशा ये शब्द किसी भी वाक्य के आरंभ में प्रयोग में आते हैं; जैसे - आह!, हाय!, बाप रे!, अरे!, छी!, शाबाश! इत्यादि।

उदाहरण -

(1) **वाह!** अति सुन्दर है।

(2) **अरे!** तुम यहाँ कैसे?

(3) **छी:-छी:!** कितना गन्दा है।

(4) **सावधान!** आगे गड्ढ़ा है।

(5) **अच्छा!** हम भी चल रहे हैं।

(6) **शाबाश!** बहुत अच्छा लिखा है।